सोहर

छोटी मुटी बनवा सिहुलिया के, बनवा सोहावन हो ।
ललना, ताहि बीचे सीता बनवासल, भुइयाँ लोटी रोवेली हो ।।1।।
बन में से निकले बनसपती, त सीता समुझावेली हो ।
ए सीता, कवन संकट तोरा पड़ले त भुइयाँ लोटी रोवेलू हो ।।2।।
के मोरा आगे पीछे बइठी, त के होइ धगरिन हो ।
वनसपती, के दीहें सोने के हँसुअवा, केइए नार काटे नू हो ।।3।।
हम तोरा आगे-पीछे बइठबि, हम होइबो धगरिन हो ।
मोरें सीता, हम देबो सोने के हँसुअवा, त हमहिं नार छिलबि हो ।।4।।
घड़ी राति गइले पहर राति, होरिला जनम लेले हो ।
ए ललना, बाजे लागल आनन्द बधावा, महल उठे सोहर हो ।।5।।
हँकरहुँ बन में नउआ, बेगहिं चलि आवहु हो ।
ए नउआ, सीता के भइले ललनवा, लोचन पहुँचावहु हो ।।6।।
पहिला लोचन राजा दशरथ, दुसरे कोसिला रानी हो ।
आरे, तीसरे लोचन बाबू लछुमन, राम जनि सूनसु हो ।।7।।
चारहिं खंड के पोखरवा, त राम दतुअन करे हो ।
आरे, ओहि बाटे चललन नउआ, त राम हँसि पूछेले हो ।।8।।